बी.ए. द्वितीय वर्ष
प्रथम प्रश्न-पत्र

(1)

— डा० कृपा शंकर यादव

अरस्तू का क्रांति सम्बन्धी सिद्धान्त (Aristotle's Theory of Revolution)

→ क्रांति का अर्थ संविधान में हर छोटा-बड़ा परिवर्तन है। अगर परिवर्तन पूर्ण होता है तो वह पूर्ण क्रांति है और यदि आंशिक होता है तो आंशिक क्रांति है।

⇒ क्रांति के कारण :- (1) मूल (Basic) (2) सामान्य (General) (3) विशेष (Particular)

→ (1) मूल कारण (Basic Causes) :- विद्रोह या क्रांति का कारण सदैव असमानता में पाया जाता है।

समानता
- (1) संख्यात्मक समानता :— जनतंत्रात्मक धारणा। सभी मनुष्य समान रूप से स्वतंत्र जन्मे हैं अतः राजनीतिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में उन्हें समान अधिकार मिलना चाहिए।
- (2) आनुपातिक समानता (योग्यता सम्बंधी समानता) :- कुछ वर्ग धन तथा योग्यता और अन्य बातों की श्रेष्ठता के अनुपात में राजनीतिक शक्ति एवं सत्ता में अधिक भाग प्राप्त करना चाहता है।

— छोटे व्यक्ति बराबर होने के लिए विद्रोही बना करते हैं और बराबर स्थिति वाले बड़े बनने के लिए। यही वह मनोदशा है जिसमें क्रांतिकारियों की उत्पत्ति होती है।

→ (2) सामान्य कारण (General Causes) :-

(i) शासकों की धृष्टता एवं स्वार्थसिद्धि की भावना —
(ii) सम्मान की आकांक्षा :- अयोग्य का सम्मान एवं योग्य का अपमान होने पर।
(iii) उच्चता की भावना :- धन या यश के कारण उच्च समझने की भावना
(iv) भय :- अन्याय से अविश्वास, अविश्वास से भय एवं भय से क्रांति होती है।
(v) घृणा :- धनिक शासक बहुसंख्यक जनता को हिकारत की दृष्टि से देखने के कारण।
(vi) शासक वर्ग में आपसी विद्वेष — गुटबंदी, ईर्ष्या एवं षड्यंत्र।
(vii) जातीय मतभेद — विभिन्न जातियों में मतभेद के कारण क्रांति एवं विघटन।
(viii) राज्य के किसी अंग में अनुपात से अधिक वृद्धि होने पर क्रांति।
(ix) किसी शासकीय पद की शक्ति में अनावश्यक वृद्धि (x) विदेशी तत्व
(xi) निर्वाचन सम्बंधी षड्यंत्र (xii) मध्यम वर्ग की अनुपस्थिति (xiii) शासक-वर्ग की असावधानी (xiv) अल्प परिवर्तनों की उपेक्षा (xv) शक्ति-संतुलन